

# राजस्थान सरकार

**प्रधानमंत्री**

**एक वर्ष परिणाम उत्कर्ष**

**जिले के पंच गौरव**

**मुख्यमंत्री, राजस्थान**

**एक जिला - एक उपादान :-** समस्तों की मीठबांकी की प्रमुख उपादान है। औदृष्टि राष्ट्र से 150 लाख बड़े व्यापारी देश में इसकी बहुत ज्यादा मालामाल वितरण में जुटी है। यहाँ की सारोंगों उत्पादन के कानून 150 से अधिक अंतर्राष्ट्रीय वितरण में विवरित है। यहाँ का कालानी-सारोंगों सारोंगों का लेता दूरसंचार में विवरित है। राष्ट्रीय सरोंगों अनुदान कानून 1993 में घोषित किया गया है।

**एक जिला - एक प्रजाति :-** कलानव जल शेष का प्रमुख पाठाना है। प्राचीनों के अनुसार यह जलानन श्री कृष्ण का रिय भूमि है। कलानव का वासन लिखना नाम साहित्यिक कलाकार है। कलानव की छह प्रजातियाँ हैं जेदू- राज- कलानव, शुभंगी कलानव, छद्मी कलानव। शहद का उत्पादन भरतपुर में जाता है।

**एक जिला - एक उपज :-** शहद का उत्पादन भरतपुर में जाता है। यहाँ से जूहों से जूहा व वाता शहद वर्षाक एवं उत्तरायणी सामाजिक विवरण के द्वारा राष्ट्रीय सरोंग द्वारा वितरण करा जाता है। राष्ट्रीय शहद में गोदाना बहुताया में वापर जाता है।

**एक जिला - एक खेत :-** कुझी भारतपुर रियासतकाल में यहाँ का प्रमिद खेत रहा है। गाव-गांव में आवासियों लेने वाले मेलों में यहाँ का प्रमिद खेत ही ही रही है। यहाँ के घटलाडानों ने सामन-समन पर दें- विदें तक अपनी धरवाहा बनाई है। यहाँ जनमें अनेकों घलवान गोवधान कम्पी हैं।

**एक जिला - एक पर्यटक :-** केवल देव गढ़ीय धरा फौं अधिकारी वर्ष 1995 से दूर्दाम्बो की विद्युत वितरण सूची में शामिल है। इस उत्तर का हिक्कल 2873 है। भर्ती की दृश्य में मंदिरों की जाता है। कलानव 365 खालीपांचों के प्रभावी फौं अधिकारी वर्ष 1995 से हवारों विलाम्बित का सर्व विवरण करा रहा है।

# पंच गौरव कार्यक्रम

# जिला भरतपुर



RAJASTHAN  
The Incredible State of India!

## Lohagarh Fort, Bharatpur

लोहागढ़ किला, भरतपुर





मुख्यमंत्री  
राजस्थान

## संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच-गौरव कार्यक्रम की शुरुआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जिले में पंच-गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए में अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूं।

  
(भजन लाल शर्मा)

जिला कलक्टर  
एवं जिला मजिस्ट्रेट  
भरतपुर



## अपनी बात.....

माननीय मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा के निर्देशन में प्रत्येक जिले में विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण के साथ ही इन गतिविधियों के माध्यम से आर्थिक उन्नति एवं रोजगार के अवसरों में बढ़ोतरी कर जिले के सर्वांगीण विकास हेतु राज्य में “पंच गौरव” कार्यक्रम शुरू किया गया है।

कार्यक्रम अन्तर्गत जिले में विरासत एवं पारिस्थितिकी को ध्यान में रखते हुए “पंच गौरव” के रूप में जिले में एक जिला—एक उत्पाद, एक जिला—एक उपज, एक जिला—एक वनस्पति प्रजाति, एक जिला—एक खेल एवं एक जिला—एक पर्यटन स्थल चिह्नित किए गये हैं। इसी क्रम में भरतपुर जिले में एक जिला—एक उत्पाद में सरसों का तेल, एक जिला—एक उपज में शहद, एक जिला—एक वनस्पति प्रजाति में कदम्ब का पेड़, एक जिला—एक खेल में कुशती एवं एक जिला—एक पर्यटन स्थल में केवलादेव नेशनल पार्क (घना पक्षी अभ्यारण्य) का चयन किया गया है। इन सबके चयन के पीछे ऐतिहासिक, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक महत्व है।

वीरता, त्याग और बलिदान की धरा राजस्थान का पूर्वी प्रवेश द्वारा कहा जाने वाला भरतपुर अपनी गौरवशाली संस्कृति एवं वीरता से ओत—प्रोत इतिहास को समेटे हुए है। यहां के शासकों ने समय—समय पर बनाये गये किले, महलों, मन्दिरों की भव्यता, सुन्दर नक्कासी आज भी अपने वैभवशाली स्थापत्यकला को दर्शाती है। केवलादेव राष्ट्रीय घना पक्षी अभ्यारण्य एवं यहां के जलस्रोतों में पक्षियों का कलरव, सुरम्य जंगलों, अभ्यारण्यों, पहाड़ी क्षेत्रों में बायोडायवर्सिटी की विपुलता इको ट्रियुरिज्म को पसंद करने वाले पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

बृजमंडल की संस्कृति यहां के जनमानस में रची—बसी हुई है। मेले, तीज—त्योहारों के अवसर पर जिनका दिग्दर्शन किया जा सकता है। यहां के नागरिकों ने अपनी जीवितता, सबलता एवं बौद्धिकता के बल पर देश—विदेशों तक अपनी पहचान बनाई है। यहां के खिलाड़ियों ने अपनी प्रतिभा के बल पर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक नाम रोशन किया है। यहां के सरसों के तेल की गुणवत्ता एवं शहद की मिठास देशभर में विख्यात है।

आशा है इस कार्यक्रम से विकास को गति मिलेगी तथा रोजगार एवं स्वरोजगार को बढ़ावा मिलेगा। कार्यक्रम से जुड़े सभी विभाग टीम भावना से कार्य करते हुए राज्य सरकार की मंशा के अनुरूप पंच गौरव कार्यक्रम का सफलतापूर्वक संचालन एवं क्रियान्वयन कर जिले की विशेषताओं एवं विविधताओं को देशभर में पहचान दिलाने में कामयाब होंगे।

(डॉ. अमित यादव)  
जिला कलक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट  
भरतपुर

## विवरणिका

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1	एक जिला एक प्रजाति : कदम्ब का वृक्ष	1-4
2	एक जिला एक पर्यटन स्थल : केवलादेव नेशनल पार्क	5-7
3	एक जिला एक उत्पाद : सरसों का तेल	8-9
4	एक जिला एक उपज : शहद	10-13
5	एक जिला एक खेल : कुश्ती	14-17
6	कार्य योजना	18-22

**पंच गौरव जिला भरतपुर**  
 संरक्षक  
 डॉ. अमित यादव  
 जिला कलक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट  
 भरतपुर  
 संपादक मंडल

हरिओमसिंह गुर्जर संयुक्त निदेशक सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग भरतपुर	रामप्रकाश संयुक्त निदेशक आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग भरतपुर
---	---

### सहयोग

1. मानस सिंह, मण्डल वन अधिकारी, निदेशक घना, भरतपुर
2. रमेश चन्द महावर, संयुक्त निदेशक, कृषि विभाग, भरतपुर
3. चन्द्रमोहन गुप्ता, महा प्रबंधक जिला उद्योग केन्द्र, भरतपुर
4. संजय जोहरी, उप निदेशक, पर्यटन विभाग, भरतपुर
5. अभिषेक पवार, जिला खेल अधिकारी, भरतपुर
6. जनक राम मीणा, उपनिदेशक, उद्यान विभाग, भरतपुर
7. रवि कुमार गुप्ता, वरिष्ठ सहायक, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग, भरतपुर

# एक जिला—एक प्रजाति:— कदम्ब का वृक्ष

कदम्ब वृक्ष, जिसे वैज्ञानिक रूप से **Neolamarckia Cadamba** कहा जाता है, इसे अंग्रेजी में बरफलॉवर—ट्री कहते हैं। यह वृक्ष उष्ण कटिबंधीय और उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में पाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण वृक्ष है। यह वृक्ष भारत के विभिन्न भागों में विशेष रूप से राजस्थान, कर्नाटक, केरल, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल और ओडिशा जैसे राज्यों में पाया जाता है। भगवान् श्रीकृष्ण से जुड़ाव के कारण भारत में कदम्ब की धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताएं हैं। लोक मान्यताओं में कदम्ब के वृक्ष को शुभ माना जाता है और इसे घर में लगाने की सलाह दी जाती है।

## कदम्ब वृक्ष की विशेषताएं

कदम्ब एक बड़ा वृक्ष है, जिसकी ऊँचाई 45 मीटर तक हो सकती है। इसकी पत्तियाँ 13–32 सेमी लंबी होती हैं और इसके फूल मीठे सुगंधित होते हैं। कदम्ब वृक्ष को हिंदी और संस्कृत में कदम्ब और अंग्रेजी में Kadamba कहा जाता है। नियोलामार्किया कैडाम्बा, जिसका अंग्रेजी सामान्य नाम बरफलॉवर—ट्री, लारन और लीचहार्ट पाइन है और स्थानीय रूप से इसे कदम्बया कैडाम्बा कहा जाता है। दक्षिण पूर्व एशिया का यह एक सदाबहार, उष्णकटिबंधीय वृक्ष है। इसमें घने गोलाकार गुच्छों में सुगंधित नारंगी फूल होते हैं। फूलों का उपयोग इत्र में किया जाता है। पेड़ को सजावटी पौधे के रूप में और लकड़ी और कागज बनाने के लिए उगाया जाता है।

कदम्ब का एक पूर्ण रूप से परिपक्व पेड़ 45 मीटर (148 फीट) की ऊँचाई तक पहुंच सकता है। यह एक बड़ा पेड़ है जिसमें एक चौड़ा मुकुट और सीधा बेलनाकार तना होता है। यह तेजी से बढ़ता है, इसकी शाखाएँ चौड़ी फैली हुई होती हैं और यह पहले 6–8 वर्षों में तेजी से बढ़ता है। ट्रंक का व्यास 100–160 सेमी होता है, लेकिन आमतौर पर इससे कम होता है। पत्तियाँ 13–32 सेमी (5.1–12.6 इंच) लंबी होती हैं। आमतौर पर फूल तब खिलना शुरू होते हैं जब पेड़ 4–5 साल का होता है। इसके फूल मीठी खुशबू वाले, लाल से नारंगी रंग के होते हैं, जो लगभग 5.5 सेमी (2.2 इंच) व्यास के घने, गोलाकार सिर में होते हैं। एन. कैडाम्बा का फल छोटे, मांसल कैप्सूल में होता है जो एक दूसरे के साथ मिलकर एक मांसल पीले–नारंगी रंग का फल बनाता है जिसमें लगभग 8000 बीज होते हैं। पकने पर, फल अलग हो जाता है, बीज छोड़ता है, जो फिर हवा या बारिश से फैल जाते हैं।

फल और पुष्पगुच्छ कथित तौर पर मनुष्यों द्वारा खाने योग्य होते हैं। ताजे पत्ते मधेशियों को खिलाए जाते हैं। लकड़ी का उपयोग प्लाईवुड, हल्के निर्माण, लुगदी और कागज, बक्से और टोकरे, खोदे गए डोंगियों और फर्नीचर घटकों के लिए किया जाता है।

कदम्ब उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में सबसे अधिक लगाए जाने वाले पेड़ों में से एक है। यह पेड़ सड़कों के किनारे और गांवों में छाया के लिए उगाया जाता है। कदम्ब पुनर्वनीकरण कार्यक्रमों के लिए उपयुक्त है। यह बड़ी मात्रा में पत्ती और गैर-पत्ती कूड़े को गिराता है जो

अपघटन पर इसकी छतरी के नीचे मिट्टी के कुछ भौतिक और रासायनिक गुणों में सुधार करता है। यह मिट्टी के कार्बनिक कार्बन, धनायन-विनिमय क्षमता, उपलब्ध पौधों के पोषक तत्वों और विनिमय योग्य आधारों के स्तर में वृद्धि को दर्शाता है।

कदम्ब की जड़ की छाल से एक पीला रंग प्राप्त होता है। कदंब के फूल इत्र के उत्पादन में एक महत्वपूर्ण कच्चा माल हैं, जो चंदन (संतालम प्रजाति) के आधार पर भारतीय इत्र है। जिसमें हाइड्रो-डिस्टिलेशन के माध्यम से एक सार अवशोषित होता है। पत्तियों का अर्क मुंह के गरारे के रूप में काम आता है। बल्बनुमा फल (फूलों वाला) खाने योग्य होता है और उत्तरी भारत में इसे कच्चा खाया जाता है। यह सुगंधित, मीठा और स्वाद में थोड़ा तीखा होता है और इसे स्वाद के रूप में व्यापक रूप से खाया जाता है। पत्ती के अर्क का उपयोग हाल ही में सतह-संवर्धित रमन स्पेक्ट्रोस्कोपी के लिए चांदी के नैनोकणों का उत्पादन करने के लिए किया गया है।

### पौराणिक महत्व

कदम्ब वृक्ष को भगवान श्री कृष्ण से जोड़ा जाता है और ऐसा माना जाता है कि गोकुल में एक प्राचीन कदम्ब वृक्ष है जहाँ भगवान श्री कृष्ण ने माता यशोदा को ब्रह्मांड के दर्शन कराए थे। हिंदू परंपरा के अनुसार 27 नक्षत्र, 12 भाव (राशियाँ) और नौ ग्रह, विशेष रूप से 27 वृक्षों द्वारा दर्शाए गए हैं अर्थात् प्रत्येक नक्षत्र के लिए एक वृक्ष का महत्व है। धार्मिक परम्पराओं में कदम्ब वृक्ष शतभिषा का प्रतिनिधित्व करता है, जो मोटे तौर पर कुंभ राशि के समान है।

### ऐतिहासिक महत्व

लोक मान्यता है कि कदम्ब का नाम कदम्ब राजवंश के नाम पर पड़ा है, जिसने 345 ई. से 525 ई. तक बनवासी से शासन किया था, जो अब कर्नाटक राज्य है। जिसका उल्लेख 450 ई. के तलगुंडा शिलालेख में मिलता है। कदम्ब वृक्ष को कदम्ब वंश द्वारा एक पवित्र वृक्ष माना जाता था। कदम्ब का फूल ब्रिटिश राज के दौरान भारत की अथमलिक रियासत का प्रतीक था। तमिलनाडु के मदुरै स्थित मीनाक्षी मंदिर के प्रवेशद्वार पर कदंब का पेड़ विद्यमान है जिसे बहुत शुभ माना जाता है।

### धार्मिक महत्व

जयदेव द्वारा गीत गोविंद राधा कृष्ण के साथ कदम्ब का उल्लेख भागवत पुराण में मिलता है। उत्तर भारत में इसे श्रीकृष्ण से जोड़ा जाता है, जबकि दक्षिण में इसे पार्वती का वृक्ष कहा जाता है। माना जाता है कि राधाजी और श्रीकृष्ण कदम्ब वृक्ष की मीठी-सुगंधित छाया में खेलते थे। तमिलनाडु के संगम काल में, मदुरै के तिरुप्पारनकुंद्रम पहाड़ी के मुरुगन को प्रकृति पूजा के केंद्र के रूप में संदर्भित किया जाता था। वे कदम्ब वृक्ष के नीचे भाले के रूप में थे। कदम्ब वृक्ष का संबंध कदम्बरी अम्मन नामक वृक्ष देवता से भी है। कदम्ब जिसे शहर का स्थल वृक्षम माना जाता है जिसे अन्यथा कदम्बवनम (कदंब वन) के रूप में जाना

जाता है और यह मीनाक्षी अम्मन मंदिर में मौजूद है। थेरवाद बौद्ध धर्म में कदम्ब वृक्ष वह स्थान था जहाँ सुमेधा बुद्ध ने ज्ञान प्राप्त किया था।

### औषधीय गुण

आयुर्वेद में कदम्ब की पत्तियाँ, छाल और फल का उपयोग विभिन्न बीमारियों के इलाज में किया जाता है, विशेषतया मधुमेह और शारीरिक कमजोरी दूर करने की दवाओं में इसका उपयोग किया जाता है। कदम्ब वृक्ष की छाल का उपयोग मधुमेह के इलाज में किया जाता है। कदम्ब के फल का उपयोग शारीरिक कमजोरी को दूर करने में मदद करता है। कदम्ब वृक्ष की पत्तियाँ और छाल का उपयोग त्वचा संबंधी समस्याओं के इलाज में किया जाता है। कदम्ब वृक्ष का तेल बालों के लिए फायदेमंद होता है। कदम्ब का पेड़ काफी सारे फाइटो-केमिकल्स और बायोलॉजिकल गुणों से युक्त होता है। इसके एंटी मलेरियल, एंटी-फंगल एनाल्जेसिक और एंटी इन्फ्लेमेटरी गुणों के कारण इसका प्रयोग कई बीमारियों के उपचार और सिंथेटिक केमिकल्स के विकल्प के रूप में किया जाता है, साथ ही इसका प्रयोग त्वचा रोगों के इलाज, बुखार व मसल्स पेन जैसी बीमारियों में कर सकते हैं।

कदम्ब के पेड़ में कई एंटीऑक्सीडेंट होते हैं, जो इसकी पत्तियों में पाए जाते हैं, इनका प्रयोग कई बीमारियों के इलाज में फायदेमंद माना जाता है। ये फी रेडिकल्स से होने वाले नुकसान और सेल्स में डीएनए डेमेज होने से भी रोकता है। इसमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट एवं एंटी-बैक्टीरियल गुणों के कारण इसका इस्तेमाल कैंसर, लीवर, अर्थराइटिस जैसी बीमारियों के उपचार में भी किया जाता है। शरीर में लगे घाव पर इसकी छाल से तैयार किए गये घोल को लगाने से फायदा मिलता है। कदम्ब के पेड़ का अर्क बैक्टीरिया से बचाता है। इसके जड़ के अर्क में लिपिड कम करने वाले गुण होते हैं। कदम्ब के पेड़ की लकड़ी का इस्तेमाल प्लाईवुड, हल्के निर्माण, लुगदी और कागज, बक्से और टोकरे आदि बनाने में किया जाता है। कदम्ब के पेड़ को देववृक्ष यानि देवताओं का वृक्ष भी कहा जाता है।

### भरतपुर में कदम्ब वृक्ष

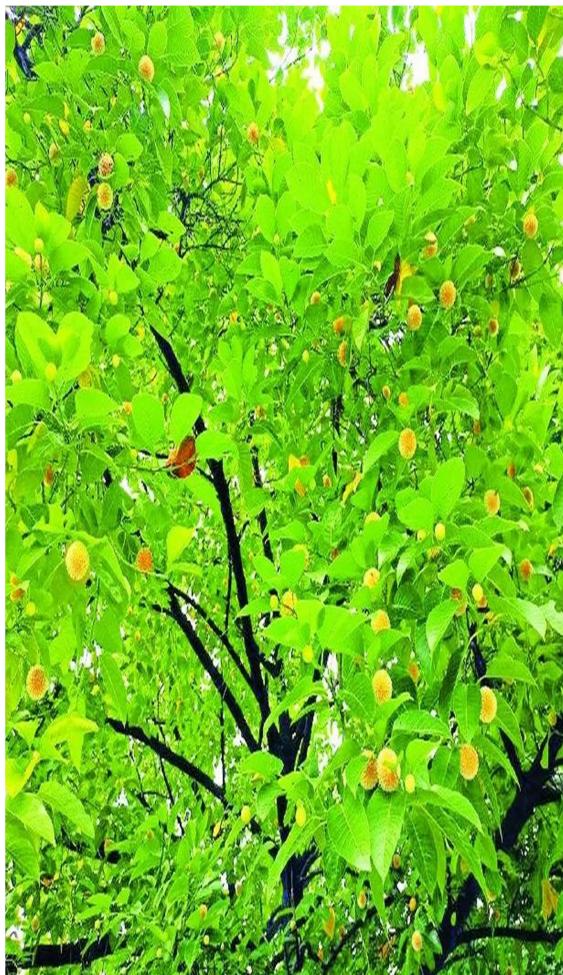
भरतपुर में कदम्ब वृक्ष को केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान में एक विशेष स्थान प्राप्त है। इस उद्यान में कदम्ब वृक्ष बहुतायात में स्थित है, जो इसकी प्राकृतिक सुंदरता और पारिस्थितिक संतुलन को बढ़ाते हैं। ये वृक्ष उद्यान के आर्द्धभूमि वातावरण में पनपते हुए नम परिस्थितियों के प्रति अपनी अनुकूलता का प्रमाण देते हैं। इनके सुगंधित फूल मानसून के दौरान खिलते हैं जो हवा को मधुर सुगंध से भर देते हैं, जिससे पर्यटक और वन्यजीव दोनों आकर्षित होते हैं।

भरतपुर के कदम्ब वृक्षों ने प्रसिद्ध विभुतियों का भी ध्यान आकर्षित किया है। सन् 1980 के दशक में ब्रिटेन के प्रिस चार्ल्स, भारत के पूर्व राष्ट्रपति नीलम संजीव रेण्डी और पक्षी विज्ञानी डॉ. सलीम अली जैसे व्यक्तियों ने केवलादेव राष्ट्रीय पक्षी उद्यान में कदम्ब के पौधे रोपे थे। ये वृक्ष, जो अब परिपक्व हो चुके हैं, उनकी यात्राओं की जीवंत सूतियाँ हैं। उद्यान में कदम्ब के वृक्षों की संख्या स्वाभाविक रूप से बढ़ी है न कि रोपण पद्धति से, जो कि इस क्षेत्र

के साथ कदम्ब के ऐतिहासिक जुड़ाव को दर्शाती है। स्थानीय किंवदंती के अनुसार, मानसून के दौरान गरज के साथ कदम के फूल खिलते हैं, जो भरतपुर में उनकी रहस्यमयीता को और बढ़ाता है।

### निष्कर्ष

कदम्ब वृक्ष केवल एक वनस्पति नहीं है। यह विज्ञान, स्वास्थ्य लाभ, पौराणिक कथाओं और क्षेत्रीय विरासत के आपसी संबंध का जीवंत प्रमाण है। इसके वैज्ञानिक योगदान, पारिस्थितिकी तंत्र को समर्थन देना, संसाधन प्रदान करना और इसके औषधीय गुण इसके व्यावहारिक मूल्य को उजागर करते हैं। पौराणिक रूप से, यह पौधा पवित्र प्रतीक के रूप में माना जाता रहा है, जो मानवता को विभिन्न संस्कृतियों की दिव्य कथाओं से जोड़ता है। भरतपुर में यह एक प्राकृतिक और सांस्कृतिक खजाना के रूप में पनपता है, जो अनुकूलता और श्रद्धा का प्रतीक है। कदम्ब का वृक्ष हमें प्रकृति की गहन प्रेरणा, संरक्षण और एकता की क्षमता की याद दिलाता है। कदम्ब की प्रजाति का संरक्षण यह सुनिश्चित करता है कि इसकी विरासत, वैज्ञानिकता, स्वास्थ्यवर्धक और आध्यात्मिक महत्व आने वाली पीढ़ियों के लिए बनी रहे।



भरतपुर में कदम्ब

- भरतपुर राजस्थान के ब्रज क्षेत्र में आता है यहां भगवान श्रीकृष्ण की क्रीड़ा स्थली रहा है, यहां पौराणिक काल से कदम्ब के वृक्षों का महत्व रहा है।
- भरतपुर की जलवायु एवं भूमि कदम्ब के वृक्ष के लिए अनुकूल है।
- भरतपुर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में आज भी कदम्ब के पुरानक वृक्ष बहुतायात में पाये जाते हैं।
- भरतपुर में कदम्ब की प्रमुख प्रजातियों में राजकदम्ब, धूली कदम्ब, कदम्बिका आदि पाई जाती है।
- वन विभाग की प्रत्येक नर्सरी में कदम्ब का पेड़ वर्षाकाल में उपलब्ध रहता है।
- भरतपुर जिला मुख्यालय की नर्सरी में कदम्ब के पौधे के सभी प्रजातियों के पौध उपलब्ध कराई जाती हैं।

# एक जिला—एक स्थल :— केवलादेव नेशनल पार्क

केवलादेव घना राष्ट्रीय पक्षी उद्यान भारत में प्रसिद्ध वन्यजीव अभयारण्य में से एक है। यह उद्यान एक अद्भुत पर्यटन स्थल का केन्द्र है। इस विख्यात पक्षी अभयारण्य में हजारों दुर्लभ और संकटापन्न पक्षियों की प्रजातियां पाई जाती हैं। इस राष्ट्रीय उद्यान में लगभग 360 प्रजाति के पक्षियों ने अपना बसेरा बनाया है। उद्यान में शीत ऋतु में बड़ी संख्या में पक्षीविज्ञानी भी आते हैं। यहां गैर प्रवासी प्रजनन पक्षी बड़ी मात्रा में पाए जाते हैं। इसलिए यह एक महत्वपूर्ण पक्षी देखने का स्थल बर्ड वाचिंग साइट है। इस अभ्यारण्य में साइबेरिया और चीन जैसे देशों के साथ अफगानिस्तान और तुर्कमेनिस्तान से भी पक्षियों की विभिन्न प्रजातियां हर साल आती हैं। यहां सर्दियों के मौसम में साईबेरिया से सारस आदि पक्षी भी आते हैं।

## केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान का इतिहास

केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान जिसे पहले भरतपुर पक्षी अभयारण्य के नाम से जाना जाता था। यह एक मानव निर्मित आर्द्धभूमि है। इस क्षेत्र में बाढ़ की रोकथाम एवं झीलों में पानी की आपूर्ति के लिए 1726 से 1763 के बीच महाराजा सूरजमल ने अजान बांध का निर्माण करवाया था। यह बांध गंभीर और बाणगंगा नदियों के संगम पर बनाया गया है। घना अभयारण्य की स्थापना 18 वीं शताब्दी में भरतपुर महाराजा सूरजमल द्वारा शिकार के लिए एक संरक्षित क्षेत्र के रूप में की गई थी। 1850 के दशक में भरतपुर के महाराजाओं ने इस क्षेत्र का उपयोग शिकारगाह के रूप में करना शुरू कर दिया था। यहां पर ब्रिटिश वायसराय के सम्मान में पक्षियों के सालाना शिकार का आयोजन किया जाता था। इस उद्यान में साल 1938 में भारत के गवर्नर जनरल लिनलिथगो के काल में केवल एक ही दिन में करीब 4273 पक्षियों का शिकार किया गया था। उस दौरान मेलोर्ड एवं टील जैसे पक्षी बहुतायत में मारे गए थे। जनरल लिनलिथगो ने अपने सहयोगी विक्टर होप के साथ इन पक्षियों का शिकार किया था।

## विश्व धरोहर स्थल

केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान 13 मार्च, 1956 में यह एक पक्षी अभयारण्य बन गया। 1981 में इसे रामसर कन्वेंशन के तहत अंतर्राष्ट्रीय महत्व की आर्द्धभूमि के रूप में नामित किया गया था। 10 मार्च 1982 को इसे राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया गया। 1985 में यूनेस्को ने इसे विश्व धरोहर स्थल के रूप में सूचीबद्ध किया। भगवान शिव को समर्पित प्राचीन मंदिर पार्क में स्थित हाने के कारण इसका नाम बदलकर केवलादेव कर दिया गया। यहां बुडलैंड्स, दलदल और गीले घास के मैदान पार्क के एक बड़े हिस्से को कवर करते हैं, जिसका क्षेत्रफल 11 वर्ग मील (29 वर्ग किमी) है।

केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान, भारत का एकमात्र राष्ट्रीय उद्यान है जो पूरी तरह से 2 मीटर ऊंची चारदीवारी से घिरा हुआ है। इसके चारों ओर दीवार बनाने का उद्देश्य अतिक्रमण, अवैध गतिविधियों और अन्य जैविक गड़बड़ी की संभावनाओं को कम करना है। यह राष्ट्रीय उद्यान भारतीय वन अधिनियम 1927 और वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972 के प्रावधानों के तहत

कानूनी रूप से संरक्षित है। इसका प्रबंधन राजस्थान वन विभाग द्वारा स्थानीय समुदायों, राष्ट्रीय संरक्षण संगठनों और अन्य अंतरराष्ट्रीय निकायों की मदद से किया जाता है।

### जैव विविधता एवं पक्षियों का कलरव

केवलादेव राष्ट्रीय पक्षी उद्यान एशिया में पक्षियों के समूह प्रजातियों वाला सर्वश्रेष्ठ उद्यानों में से एक है। भरतपुर की गर्म जलवायु में सर्दियाँ बिताने प्रत्येक वर्ष साइबेरिया के दुर्लभ सारस यहाँ आते हैं। एक समय में भरतपुर के राजकुँवरों की शाही शिकारगाह रहा यह उद्यान विश्व के उत्तम पक्षी विहारों में से एक है जिसमें पानी वाले पक्षियों की चार सौ से अधिक प्रजातियों की भरमार है। गर्म तापमान में सर्दियाँ बिताने अफगानिस्तान, मध्य एशिया, तिब्बत से प्रवासी पक्षियों की आकर्षक प्रजाति तथा आर्कटिक से साइबेरियन, साइबेरिया से भूरे पैरों वाले हंस और चीन से धारीदार सिर वाले हंस जुलाई-अगस्त में यहाँ आते हैं और अक्टूबर-नवम्बर तक उनका प्रवास काल रहता है। उद्यान के चारों ओर जलकौओं, स्पूनबिल, लकलक बगुलों, जलसिंह इबिस और भूरे बगूलों का समूह देखा जा सकता है।

पक्षियों की आवाजाही में मौसमी उतार-चढ़ाव को देखने और जांचने के लिए केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान में 22 वर्षों की अवधि के बाद ओरिएंटल डार्टर्स के लिए रिंगिंग की व्यवस्था की गई है। इससे उनके द्वारा पहले इस्तेमाल किए गए घोंसलों पर उनके वापस आने की आदत का पता लगाने में मदद मिली। इससे ओरिएंटल डार्टर्स के संरक्षण में भी मदद मिलेगी। पहले ज्यादातर प्रवासी पक्षियों पर उनके उड़ान के मार्गों, स्टॉपओवर साइटों और प्रजनन क्षेत्रों का पता लगाने के लिए रिंगिंग की जाती थी।

उद्यान में सर्दियों में रहने वाले पक्षियों में अफगानिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, चीन और साइबेरिया के जलपक्षी शामिल हैं। जिनमें गैडवॉल, शॉवेलर, कॉमन टील, टफ्टेड डक, पिंटेल, व्हाइट स्पूनबिल, एशियाई ओपन-बिल्ड स्टॉर्क, ओरिएंटल आइबिस और दुर्लभ (संभवतः विलुप्त) साइबेरियन क्रेन जैसी प्रजातियाँ शामिल हैं। पार्क में कई तरह के स्तनधारी और सरीसृप भी पाए जाते हैं। जिनमें अजगर और दूसरे सांप, हिरण, सांभर, काले हिरण, सियार, मॉनिटर छिपकली और मछली पकड़ने वाली बिल्लियाँ शामिल हैं। यहाँ मछलियों की लगभग 50 प्रजातियाँ और तितलियों की 25 प्रजातियाँ भी हैं।

केवलादेव राष्ट्रीय पक्षी उद्यान में पर्यावास में सुधार के लिए वन विभाग एवं जिला प्रशासन द्वारा समय समय पर कदम उठाये जाते हैं। जिनमें आर्द्रभूमि किनारों की मरम्मत करना, जल निकायों को गहरा करना, विदेशी प्रजातियों जैसे प्रोसोपिस, जूलिपलोरा, अफ्रीकी कैटफिश को यहाँ से हटाना आदि।

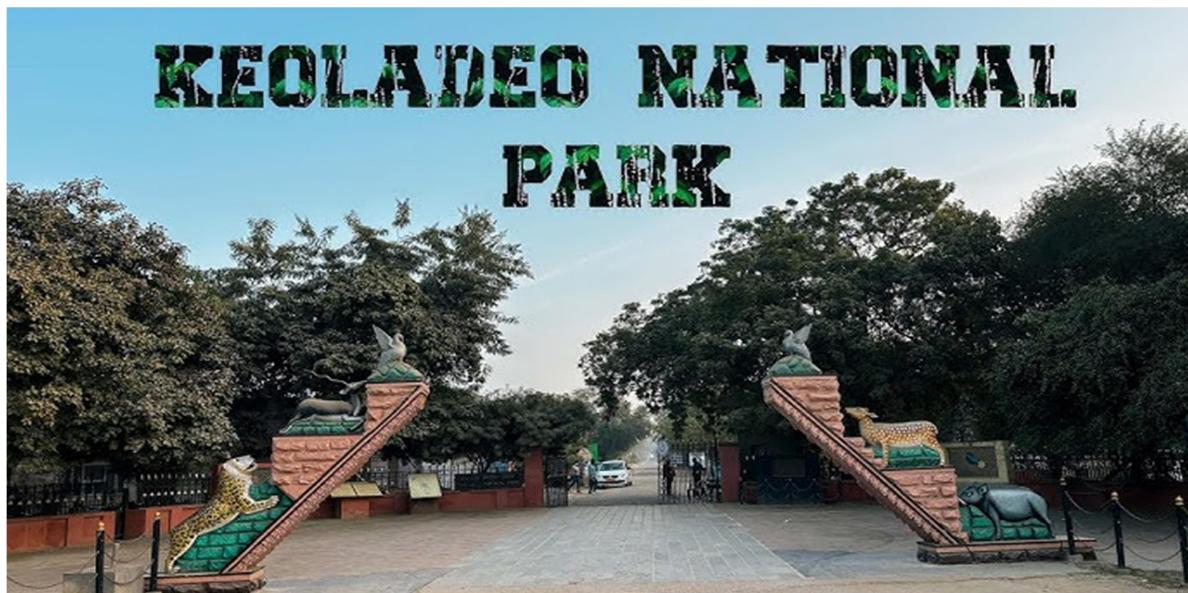
### प्रवासी पक्षियों के मार्ग

प्रवासी पक्षियों, चमगादड़ों या तितलियों द्वारा प्रवास के लिए नियमित रूप से इस्तेमाल किये जाने वाला मार्ग में से अधिकांश उत्तरी प्रजनन क्षेत्रों से दक्षिणी शीतकालीन क्षेत्रों में जाते हैं और वापस आते हैं। अधिकांश अच्छी तरह से इस्तेमाल किए जाने वाले फ्लाईवे

उत्तर-दक्षिण नदी घाटियों (जैसे, मिसिसिपी नदी घाटी), समुद्र तट (विशेष रूप से उत्तरी अमेरिका और पूर्वी एशिया के) या पर्वत शृंखलाओं का अनुसरण करते हैं। एक फ्लाईवे कुछ बिंदुओं पर केवल कुछ सौ मीटर चौड़ा हो सकता है, जैसे कि पहाड़ी दर्दे और जल निकायों के क्रॉसिंग पॉइंट अन्य स्थानों पर यह सैकड़ों किलोमीटर चौड़ा हो सकता है। एक उल्लेखनीय फ्लाईवे में सैकड़ों हजारों की संख्या में पूर्वी यूरोप से सारस और बड़े शिकारी पक्षी एक संकीर्ण धारा में बोस्पोरस को पार करते हैं।

### केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान से जुड़े तथ्य

- यह पहले महाराजाओं का बतख-शिकार रिजर्व था।
- यह साल 1850 में कृत्रिम रूप से निर्मित और अनुरक्षित आर्द्धभूमि स्थल है।
- 13 मार्च 1956 को इसे पक्षी अभ्यारण्य घोषित किया गया था।
- साल 1981 में इसे रामसर कन्वेशन के तहत इस अंतर्राष्ट्रीय महत्व की आर्द्धभूमि नामित किया गया था।
- 10 मार्च 1982 को इसे राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया गया था।
- 1985 में यूनेस्को द्वारा इसे विश्व धरोहर स्थल के रूप में सूचीबद्ध किया गया था।
- यह उद्यान 375 से अधिक पक्षी प्रजातियों का बसेरा है।
- इस राष्ट्रीय उद्यान में सारस क्रेन, जलकाग, मोर, डार्टर, उल्लू, जलपक्षी, आम कूट, बैंगनी सनबर्ड देखे जा सकते हैं।
- अन्य संकटग्रस्त एविफुना प्रजातियां जो यहां पाई जाती हैं, उनमें बेयर का पोचार्ड, डालमेटियन पेलिकन, लेजर और ग्रेटर एडजुटेंट, सिनेरियस गिर्द, स्पॉट-बिल पेलिकन आदि शामिल हैं।
- सियार, बंगाल फॉक्स, ब्लैकबक, चीतल, आम पाम सिवेट, हॉग डियर, सांभर जैसे जानवर भी यहां पाए जा सकते हैं।



## एक जिला—एक उत्पादः— सरसों तेल

सरसों तेल उत्पादन में भरतपुर देश का सबसे अग्रणी जिला है यहां हर साल 5 लाख मीट्रिक टन सरसों तेल का उत्पादन होता है। भरतपुर में सरसों के तेल की गुणवत्ता अच्छी मानी जाती है और इसकी मांग देश के कई राज्यों में है। जिले में आजादी के बाद से ही बड़े पैमाने पर सरसों के तेल का उत्पादन होता आया है। यही वजह है कि आज भरतपुर जिला पूरे देश में सरसों तेल उत्पादन में सबसे अग्रणी जिला है। औषधीय गुणों से भरपूर होने के कारण सरसों के तेल की मांग कोरोना काल के बाद देश भर में तेजी से बढ़ी है। आज से करीब 50 वर्ष पहले भरतपुर जिले में सरसों तेल उत्पादन की सिर्फ 10 मिलें थी। वर्तमान में पूरे जिले में 100 से 125 मिलें संचालित हो रही हैं। इनमें तेल पिराई, पैकिंग और सप्लाई आदि के लिए क्षेत्र के लोगों को रोजगार पर रखा जाता है जिसके माध्यम से करीब 15 हजार लोगों को स्थानीय स्तर पर ही रोजगार मिलता है।

### सरसों तेल उत्पादन में भरतपुर देश में अग्रणी

प्रदेश में हर वर्ष अनुमानित 15 लाख मीट्रिक टन तेल उत्पादन होता है। जिसमें से अकेले भरतपुर जिले में 5 लाख मीट्रिक टन 33 प्रतिशत तेल उत्पादन हो जाता है। पूरे देश में हर वर्ष करीब 80 लाख मीट्रिक टन सरसों तेल उत्पादन होता है, जिसका सबसे बड़ा उत्पादन लगभग 33 प्रतिशत भरतपुर जिले में होता है। यहां के तेल की सर्वाधिक सप्लाई बिहार, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, और दिल्ली आदि जगह पर होती है।

### सरसों अनुसंधान संस्थान

भरतपुर संभाग एवं आस पास के जिलों धौलपुर, करौली और सवाई माधोपुर में सरसों की उपज भी अच्छी होती है। यही वजह है कि सरसों की गुणवत्ता को और बेहतर करने एवं नई—नई किस्में विकसित करने के लिए केंद्र सरकार ने सन् 1993 में भरतपुर में सरसों अनुसंधान संस्थान भी स्थापित किया हुआ है।

## भरतपुर में सरसों उत्पादन के तथ्य

- भरतपुर जिले में रबी मौसम में जिले में मुख्यतयः सरसों, गेहूं, चना, मसूर, जौं आदि की खेती की जाती है। जिले में वर्ष 2024–25 में सरसों का करीब 162000 हैक्टेयर, गेहूं 60000 हैक्टेयर, जौं 100 हैक्टेयर, मसूर 500 हैक्टेयर और चना 1000 हैक्टेयर में बुवाई हुई है। जिले में सिंचित क्षेत्र लगभग 85 प्रतिशत एवं 15 प्रतिशत असिंचित है। जिले में मृदा अधिकतर लवणीय है। जिसके कारण दलहनी फसलों का क्षेत्रफल दिनो—दिन घटता जा रहा है एवं सरसों के क्षेत्रफल में वृद्धि होती जा रही है।
- जिले में सरसों की उत्पादकता करीब 18 किवं. प्रति हैक्टेयर है, अगर सरसों के उत्पादन से पूर्व भूमि में पर्याप्त मात्रा में हरी खाद/जैविक खाद का उपयोग कृषकों द्वारा उचित मात्रा में किया जावे तथा रासायानिक उर्वरक का उपयोग संतुलित मात्रा में किया जावे तो सरसों की उत्पादकता 22–25 किवं. प्रति हैक्टेयर की जा सकती है।
- सरसों की उत्पादन क्षमता व तेल की मात्रा में बढ़ोत्तरी के लिए किसानों को अच्छी गुणवता का बीज उपयोग, मृदा की लवणीयता को कम करने के लिए हरी खाद/जैविक खाद का उपयोग, सरसों में तेल की मात्रा को बढ़ाने के लिए सल्फर उपयोग के लिए प्रोत्साहित करना होगा। इसके साथ ही संतुलित मात्रा में उर्वरक प्रयोग के प्रदर्शन आयोजित करना, कीट/रोग नियंत्रण के लिए पौध संरक्षण कार्य समय पर करना, तकनीकी जानकारी कृषकों को प्रशिक्षित करना आदि कार्य शुरू करने होंगे। उक्त कार्यों के लिए अनुमानित व्यय 112.12 लाख रुपये की संभावना है।



## एक जिला—एक उपजः— शहद

भरतपुर में मधुमक्खी पालन की शुरुआत 1992–93 में हुई थी। भरतपुर में शहद उत्पादन और मधुमक्खी पालन, खासकर सरसों की खेती के साथ एक महत्वपूर्ण कृषि—आधारित गतिविधि बन गई है, जिससे किसानों की आय में वृद्धि हुई है।

### मधुमक्खियों का महत्व

मधुमक्खियां सरसों के पीले फूलों का परागण करती हैं, जिससे फसल की पैदावार में 20 से 25 प्रतिशत की वृद्धि होती है। भरतपुर में शहद किसान शुरुआती समय में सूरजमुखी, कपास, ज्वार, बाजरा, मक्का, तिल, अरहर और चना जैसी फसलों पर निर्भर थे, जो शहद की खेती और उत्पादन के लिए उपयोगी थी।

### मधुमक्खी पालन को प्रोत्साहन

मधुमक्खी पालन को कृषि—आधारित गतिविधि के रूप में बढ़ावा दिया जा रहा है, जिससे किसानों को लाभ हो रहा है। मधुमक्खी पालन में कम लागत में दोगुना मुनाफा कमाने की संभावना है। मधुमक्खी पालन से किसानों की आय में वृद्धि हुई है और वे एक वर्ष में 5 से 10 लाख रुपये तक कमा सकते हैं। सरकार मधुमक्खी पालन के लिए बॉक्स खरीदने पर लागत का 40 प्रतिशत अनुदान देती है।

### उत्कृष्टता केंद्र

सरकार ने मधुमक्खी पालन को बढ़ावा देने के लिए उत्कृष्टता केंद्र स्थापित करने की राज्य बजट—2025 में घोषणा की है। शहद उत्पादन को देखते हुए भरतपुर में प्रसंस्करण संयंत्र भी चालू हो गए हैं। बृज हेल्थ केयर एवं बृज हनी प्राइवेट लिमिटेड नाम से प्रोसेसिंग प्लांट यहां 2006 में स्थापित किया गया था। यहां हर साल 12,000 मीट्रिक टन शहद प्रोसेस होता है। यहां का शहद अमेरिका, कनाडा, लीबिया, सऊदी अरब आदि देशों में भेजा जाता है।

## शहद उत्पादन में वृद्धि

भरतपुर सरसों का एक प्रमुख उत्पादक जिला है, इसके कारण शहद उत्पादन बढ़ा है। इससे स्थानीय युवाओं को राजगार मिलने के साथ अपना सवयं का व्यवसाय शुरू करने में मदद मिली है जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में बदलाव आया है। 2021 में भरतपुर में अनुमानित 3,520 मीट्रिक टन शहद का उत्पादन किया गया। पूरे राजस्थान में उत्पादित शहद का करीब एक तिहाई भरतपुर से ही आता है। सरसों के फूलों से पर्याप्त मात्रा में मकरंद मिल जाता है। भरतपुर में इसी दौरान ज्यादातर शहद बनता है। फसल के दौरान दूसरे राज्यों के मधुमक्खी पालक भी बॉक्स खेतों के पास रख देते हैं।

कृषि और प्रसंस्करण खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण के अनुसार साल 2016–17 में 45,538 मीट्रिक टन शहद भारत से विदेशों में निर्यात किया गया। इसका कुल मूल्य 563 करोड़ रुपए था। देश भर में करीब 2.5 लाख किसान शहद के व्यवसाय से जुड़े हैं। अकेले भरतपुर में इस व्यवसाय में 3,000 लोग शामिल हैं। मंत्रालय के अनुसार शहद उत्पादन के क्षेत्र में राजस्थान के अलावा उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, बिहार, पंजाब, हिमाचल प्रदेश भी अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। मंत्रालय के अनुसार 17,000 मीट्रिक टन शहद का उत्पादन कर उत्तर प्रदेश पहले जबकि राजस्थान देश में पांचवें स्थान पर है।

## शहद से संवरा किसान

भरतपुर जिले में शहद उत्पादन में जो क्रांति आई है, उसने जिले को हनी बाउल यानी शहद का कटोरा बना दिया है। भरतपुर में पानी खारा होने के कारण सरसों की सबसे अधिक खेती होती है। यहां करीब 5 लाख हेक्टेयर कृषि योग्य भूमि है। इसमें से करीब 2.5 लाख हेक्टेयर जमीन पर सरसों की खेती होती है। यह खेती पहले मजबूरी थी जो अब मधुमक्खी पालन और शहद उत्पादन में वरदान बन गई है। शहद उत्पादन की संभावनाओं को देखते हुए राज्य सरकार के उद्यान विभाग द्वारा किसानों को प्रशिक्षण दिया जाता है। किसानों का आय में इजाफा करने में मधुमक्खी पालन अहम योगदान दे सकता है। इस काम में लागत ज्यादा नहीं आती, बॉक्स खरीदने पर भी सरकार लागत का 40 प्रतिशत अनुदान देती है।

भरतपुर में मधुमक्खी पालन की कहानी सबसे पहले 1992–93 में शुरू हुई थी। 1988 से जिले में काम कर रही संस्था लुपिन ह्यूमन वेलफेयर एंड रिसर्च फाउंडेशन की पहल से किसानों को अतिरिक्त आय उपलब्ध कराने के लिए इस व्यवसाय को शुरू किया गया था। शुरू में जानकारी की कमी के कारण उम्मीद के मुताबिक सफलता नहीं मिली राज्य सरकार की मदद से 1997 में इस कार्यक्रम को वैज्ञानिक तरीके से चलाया और लोगों को प्रशिक्षण दिया।

किसानों को डर था कि मधुमक्खी पालन से उनकी फसल कमजोर हो जाएगी और वे बच्चों को भी काट लेंगी। काफी समझाने के बाद कुछ किसान राजी हुए। उन्हें बॉक्स खरीदवाए गए और ऋण भी दिलवाया गया। किसानों को ऋण की राशि 3–4 साल में

लौटानी थी लेकिन फायदा हुआ तो उन्होंने दो साल में ही ऋण चुकता कर दिया। किसानों को यह डर भी था कि मधुमक्खियां फसलों का रस चूस लेंगी जिससे वह कमज़ोर हो जाएगी। किसानों को उद्यान विभाग और सरसों अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों ने समझाया कि मधुमक्खियों से फसल कमज़ोर नहीं होगी बल्कि 10–15 प्रतिशत उत्पादन बढ़ जाएगा, मधुमक्खियों के परापरागण से फसल अच्छी होती है।

### भरतपुर में शहद उत्पादन के तथ्य

- भरतपुर जिले में मधुमक्खी पालन कार्य वर्ष 1993 से किया जा रहा है।
- लगभग 585 इकाईयों से 1600 व्यक्तियों को प्रत्यक्ष एवं 2000 व्यक्तियों को परोक्ष रूप से रोजगार मिला हुआ है।
- वर्तमान में जिले में लगभग 80000 मधुमक्खी बॉक्स हैं, जिनसे जिले का शहद उत्पादन लगभग 2400 मैट्रिक टन तथा मोम उत्पादन लगभग 48 मैट्रिक टन है।
- जिले में निजी क्षेत्र में एकमात्र शहद प्रसंस्करण इकाई “बृज हनी” के नाम से स्थापित है, जिले के मधुमक्खी पालकों द्वारा मुख्य रूप से इसी इकाई को शहद की बिक्री की जाती है।



# एक जिला—एक खेलः— कुश्ती

भारत में कुश्ती की शुरूआत व्यायाम के रूप में हुई इसको फिट रहने के तरीके के रूप में देखा जाता था और बलशाली व्यक्ति को अक्सर बहुत सम्मान दिया जाता था देश के अधिकांश हिस्सों में कुश्ती का बड़े स्तर पर अभ्यास करने की परम्परा देखने को मिलती है। रियासत काल में अक्सर राजा, महाराजा एवं राजकुमार मनोरंजन के लिए कुश्ती प्रतियोगिताओं का आयोजन कराते थे। भारत में कुश्ती अनेक नामों से जानी जाती है जैसे दंगल, पहलवानी, कुश्ती, स्वदेशी कुश्ती इसका अभ्यास करने के लिए मिट्टी के अखाड़े हुआ करते थे। जबकि यूरोपीय कुश्ती संस्करण में सॉफ्टमेट लोकप्रिय रहा है। कुश्ती की अंतराष्ट्रीय प्रतियोगिताएं वर्तमान में सॉफ्टमेट पर आयोजित की जाती है। शाही परिवारों के लिए मनोरंजन का एक जरिया कुश्ती अब यह एक पेशेवर खेल के रूप में उभरा है। कुश्ती लड़ने के लिये चुश्ती फुर्ती और सही तकनीक के साथ शारीरिक शक्ति का मेल होना जरूरी है।

## कुश्ती का इतिहास

भारत में कुश्ती का प्रचलन पॉचवी शताब्दी ईशा पूर्व माना जाता है। भारत में कुश्ती का प्रारम्भिक रूप मलयुद्ध (हाथों से मुकाबला) के रूप में जाना जाता था और इससे जुड़ी हुई कई कहानियां रामायण और महाभारत जैसे प्राचीन महाकाव्यों में उल्लेखित है। दुनिया भर में पेशेवर कुश्ती साल 1830 में सामने आयी इसमें पहलवानों ने अपनी प्रतिभा दिखाने और अपना दल बनाने के लिए यूरोप का सफर तय किया। इसी युग के आस—पास कुश्ती पर फांसीसी प्रभाव के बजह से ग्रीको रोमन शैली अस्तिव में आयी। आधुनिक ओलम्पिक खेलों का 1896 में प्रारम्भ किया गया। जिसमें सैन्टलुइस ओलम्पिक 1904 खेलों में फ्री स्टाईल कुश्ती को पहली बार शामिल किया गया। लंदन ओलम्पिक 1908 में भारत को प्रतिनिधित्व करने का अवसर मिला। सर्वप्रथम केडी जाधव ने हैलेसिंकी ओलम्पिक 1952 में कुश्ती में कास्य पदक जीतकर इतिहास रच दिया।

## आलैम्पिक खेलों एवं अंतराष्ट्रीय स्तर पर भारत

महाराष्ट्र के निवासी केडी जाधव ने लंदन ओलम्पिक 1948 में डेब्यू किया था। जाधव ने पहली बार मैट पर कुश्ती लड़ी थी उन्होंने इससे पहले तक सिर्फ मिट्टी पर ही अभ्यास किया था। चार साल कड़े प्रशिक्षण के बाद अपने ओलम्पिक सफर के लिए पैसे इक्कट्ठे कर केडी जाधव ने हैलेन्सकी में बैटमवेट वर्ग में ओलम्पिक कास्य जीतकर इतिहास रच दिया। 1961 के ओलम्पिक में उदयचन्द विश्व चैम्पियनशिप के 67 किलो ग्राम वर्ग में कास्य पदक जीतने वाले पहले भारतीय पहलवान बने। इसके बाद वर्ष 1967 में भारत के विश्वबर सिंह ने नई दिल्ली में हो रही विश्व चैम्पियनशिप में 57 किलो ग्राम वर्ग में रजत पदक जीता था। एडिनवर्ग, स्कॉटलैंड में 1970 के राष्ट्रमंडल खेलों में पहलवानों को पहले से अधिक सफलता मिली। इन खेलों में भारत सबसे सफल कुश्ती टीम के रूप में उभरा। भारत ने पॉच स्वर्ण, तीन रजत, एंव एक कास्य पदक जीते थे। भारतीय पहलवानों ने 1954 में एशियाई खेलों तक

लगातार पदक हासिल किये। साल 1962 में पहला एशियार्ड स्वर्ण पदक प्राप्त किया। मारुति माने गणपत अधांलकार और मालवा सिंह ने विभिन्न कैटेगरी में जीत का परचम लहराया। 1986 एशियाई और राष्ट्रमण्डल खेलों में सभी पदक जीतने वाले पहलवान करतार सिंह, राजेन्द्रसिंह, सतपालसिंह के साथ भारतीय कुश्ती ने सफलता की सीढ़ियां चढ़ना जारी रखा। 56 साल बाद सुशील कुमार ने बीजिंग ओलम्पिक 2008 में 66 किलोग्राम फ्री स्टाईल में कास्य पदक जीतकर फिर से भारत का नाम कुश्ती में रोशन किया। सुशील कुमार 2010 में विश्व चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक जीतने वाले पहले भारतीय पहलवान बने। उन्होंने 66 किलोग्राम वर्ग में फाइनल में रूस के ऐलन गोगेव को हराया। भारत में महिला कुश्ती में नई दिल्ली में 2010 के राष्ट्र मण्डल खेलों में गीता फोगाट ने स्वर्ण पदक जीता। उन्होंने पहली भारतीय महिला पहलवान बनकर इतिहास रचा। उनकी बहन बबिता फोगाट ने 51 किलो ग्राम वर्ग में रजत पदक जीता था।

भारत ने 2010 के राष्ट्र मण्डल खेलों में भी दस स्वर्ण पदक जीते थे। जिसमें से तीन महिला पहलवानों ने जीते थे। यह पदक जीतने वाली सबसे सफल टीम बन गयी, इससे भारतीय कुश्ती को काफी बढ़ावा मिला। गीता फोगाट ने लंदन ओलम्पिक 2012 खेलों में पहली भारतीय महिला पहलवान के रूप में भाग लिया। सुशील कुमार ने लंदन ओलम्पिक 2012 में रजत पदक एवं योगेश दत्त ने कांस्य पदक जीता। रियो ओलम्पिक 2016 में भारत की साक्षी मलिक ने 58 किलो ग्राम में कांस्य पदक जीता। इसी के साथ वह ओलम्पिक पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनी। वीनस फोगाट ने एशियाई खेलों और राष्ट्रमण्डल खेलों में खिताब जीते तथा विश्व चैम्पियनशिप में कांस्य पदक जीत कर विश्व में नम्बर एक बन गई। टोक्यो आलेम्पिक 2020 में भारतीय पहलवान रवि कुमार दहिया ने रजत पदक हासिल किया जबकि बजरंग पूनियां ने कांस्य पदक जीता। केडी जाधव से अमन सहरावत तक भारत ने कुश्ती में आठ ओलम्पिक पदक जीते हैं। सुशील कुमार ने दो पदक जीते और साक्षी मलिक कुश्ती में मेडल जीतने वाली एक भारतीय महिला पहलवान है।

### भरतपुर में कुश्ती का प्रचलन एवं प्रगति

राजस्थान का पूर्वी सिंहद्वार कहा जाने वाला भरतपुर रियासत काल से ही कुश्ती का गढ़ रहा है। महाराजा सुरजमल से लेकर यहां के सभी शासकों ने कुश्ती को बढ़ावा देने के लिए पहलवानों को आश्रय दिया। अन्तराष्ट्रीय वर्ल्ड कुश्ती चैम्पियनशिप में भाग लेकर भरतपुर के पहलवानों ने अन्तराष्ट्रीय स्तर पर भागीदारी की है। रियासतकाल में भरतपुर के गॉव सिनसिनी में भरतीसिंह पहलवान, घन्टोली पहलवान, ननूआ पहलवान आदि ने भारत के प्रसिद्ध पहलवानों से अनेक कुश्ती जीतकर इस लोहागढ़ की भूमि को भारतवर्ष में विख्यात किया।

कोरेर गॉव के कारेसिंह पहलवान में सात मन तीस किलो वजन था और सात फुट एक इंच लम्बाई थी। इन्हें बचपन से ही पहलवानी करने का जुनून था। पहलवानी करते वे हिन्द केसरी बन गये। हिन्द केसरी बनने के बाद दूनियां में देश विदेश की बड़ी रोमांचक कुश्तियों

में हिस्सा लिया। हर कुश्ती में जीत हासिल कर भरतपुर का नाम किया। हिन्द केसरी, रुस्त-ए हिन्द केसरी, भारत भीम की उपाधि से जाट पहलवान कारे सिंह को नवाजा गया।

एक बार हिमाचल प्रदेश के शिमला जिले में एक भव्य दंगल का आयोजन हुआ था जिसमें पाकिस्तान के लालवैग नाम के पहलवान ने उस दंगल में हिस्सा लिया और भरे दंगल में सभी पहलवानों को ललकारा और कहा कि हिन्दुस्तान का कोई भी पहलवान मेरे से लड़कर दिखाये और मुझे हरा कर दिखाये तो मैं पहलवानी छोड़ दूगा। तब शिमला में भरतपुर के अंतिम शासक महाराजा सवाई विजेन्द्र सिंह भी उपस्थित थे। उन्होंने पहलवान कारेसिंह के पास संदेश भेजा और कुश्ती लड़ने के लिए बुलाया, उस वक्त कारेसिंह पहलवान की उम्र अधिक हो गई थी जिस वजह से तीन साल पहले ही कुश्ती छोड़ चुके थे। महाराजा सवाई विजेन्द्र सिंह के बुलावे पर कारेसिंह पहलवान उसी समय शिमला के लिए रवाना हुए अगले दिन भव्य दंगल को देखने के लिए बहुत ही भीड़ उमड़ पड़ी। इस रोमांचक मुकाबले में पाकिस्तान का लालवैग पहलवान कारेसिंह पहलवान के सामने चार मिनट भी नहीं टिक पाया। शर्मसार और बेइज्जत होकर वापस पकिस्तान चला गया।

भरतपुर के गाँव परमदरा में जन्मे पहलवान नन्थनसिंह गुर्जर ने राजस्थान केसरी, अखिल भारतीय प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक प्राप्त कर राष्ट्रीय चैम्पियन बने, अपने समय में इनके द्वारा डीग, भरतपुर, कामां, कोसी व राजस्थान में किसी और को गुर्ज नहीं लेने दी। 1983 में हरियाणा के नामी पहलवान चरण सिंह संगेल ने पूरे राजस्थान को चुनौती दी कि मेरा घोड़ा अब जयपुर जाकर पानी पियेगा। कामां के दंगल में पहुंच गया जहां नन्थन सिंह पहलवान ने चीते की तरह दौड़कर हाथ मिलाया और कुश्ती के लिए पन्द्रह मिनट के निर्धारित समय में से छः मिनट में ही चरणसिंह पहलवान को चारों खाने चित कर दिया। गाँव परमदरा में आज बलराम अखाड़ा नाम से संचालित है जिसमें नामी पहलवान देशभर में नाम रोशन कर रहे हैं।

डीग के पान्होरी में जन्मे रघुवीर पहलवान ने हरियाणा केसरी, राजस्थान केसरी का खिताब अपने नाम किया। रत्न पहलवान ने सात बार राजस्थान केसरी का खिताब अपने नाम किया। डीग के गाँव पास्ता में जन्मे हरी पहलवान ने लोहागढ़ केसरी का खिताब, भरतपुर के गाँव जधीना के हाथी पहलवान ने कई बार राष्ट्रीय स्तर चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक लेकर विजेता बने। 17 बार राजस्थान केसरी, चम्बल केसरी, 08 बार लोहागढ़ केसरी, 07 बार जंसवन्त केसरी, 10 बार जिला केसरी के खिताब जीत कर इस लोहागढ़ भूमि को पूरे भारत में गौरवान्वित किया। यहां के लाखन पहलवान ने लोहागढ़ केसरी, जसवन्त केसरी, किसान केसरी व महावीर केसरी का खिताब अपने नाम किया। सोनवीर पहलवान जिला केसरी व कई राष्ट्रीय चैम्पियनशिप में विजेता रहे हैं।

मलाह गाँव के सोहनलाल पहलवान ने दो बार बल्ड चैम्पियनशिप में भाग लिया। लाल सिंह पहलवान, मोरा पहलवान, जीतू पहलवान, भगवान सिंह, सुभाष पहलवान, केदार पहलवान, किशन पहलवान ने राष्ट्रीय कुश्ती प्रतियोगिताओं में भरतपुर का नाम किया। नरेन्द्र पहलवान ने भी दो बार अन्तर्राष्ट्रीय बल्ड चैम्पियनशिप कुश्ती प्रतियोगिता में भाग लिया।

चैनपुरा गांव के एन्टौनी पहलवान ने सन् 2002 में जूनियर बल्ड चैम्पियनशिप कुश्ती प्रतियोगिता ईरान में भारतीय कुश्ती टीम का प्रतिनिधित्व किया। कविता पाराशर ने अन्तर्राष्ट्रीय सीनियर कुश्ती प्रतियोगिता इस्ताबुल में भारतीय कुश्ती टीम का प्रतिनिधित्व किया।

अजान के जीतू पहलवान ने राष्ट्रीय प्रतियोगिता में दो पदक, तेजेन्द्र लाला पहलवान ने तीन बार राष्ट्रीय कुश्ती प्रतियोगिता में पदक प्राप्त किये। अखाडा दुदाधारी के चन्द्रवीर पहलवान ने राष्ट्रीय कुश्ती प्रतियोगिता में कास्य पदक, गिरसय गॉव के भीम ने राष्ट्रीय सीनियर कुश्ती प्रतियोगिता में कास्य पदक जीता। राजस्थान पुलिस में कार्यरत चन्द्रभान पहलवान, पास्ता के सत्यपाल पहलवान, लाखन आदि पहलवानों ने राष्ट्रीय कुश्ती पदक जीते। हनुमान व्यायाम शाला के निर्भय पहलवान कई बार राजस्थान केसरी राष्ट्रीय कुश्ती प्रतियोगिता में विजेता रहे। बांसरोली गांव के अशोक पहलवान ने कई राष्ट्रीय कुश्ती प्रतियोगिताओं में पदक प्राप्त किये तथा राजस्थान केसरी, लोहागढ़ केसरी, जसवन्त केसरी, जिला केसरी के खिताब अपने नाम किये।

भरतपुर की महिला पहलवानों में सीमा कुन्तल, उमा देशवाल ने पदक लेकर नाम रोशन किया। महिला पहलवानों में राष्ट्रीय कुश्ती प्रतियोगिता में पूजा गुर्जर, शिवानी दीक्षा, आरती रोहिणी, शीतल फौजदार कई पदक जीत चुकी हैं।

### **भरतपुर में बालक कुश्ती अकादमी**

खेल नीति के तहत राज्य सरकार के बजट घोषणा के अनुसार 2017 में राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद द्वारा भरतपुर लोहागढ़ स्टेडियम में बालक कुश्ती अकादमी खोली गई। जिसमें बालक कुश्ती अकादमी के पहलवानों ने राष्ट्रीय कुश्ती प्रतियोगिता में पदक लेकर नाम रोशन किया। कुश्ती अकादमी के कुशपाल, दीपक ने राजस्थान केसरी का खिताब प्राप्त किया है तथा राष्ट्रीय कुश्ती प्रतियोगिताओं में पदक जीते हैं। रक्षित चौधरी ने स्वर्ण पदक, अनिरुद्ध ने रजत पदक, मनीष माली ने रजत पदक, योगेष ने रजत पदक, विष्णु चाहर ने रजत पदक जीतकर भरतपुर का नाम रोशन किया। सिनसिनी गॉव के कुश्ती प्रशिक्षक गौतम सिंह ने कुश्ती बल्ड चैम्पियनशिप जोर्डन ओमानसिटी में भारतीय कुश्ती टीम के प्रशिक्षक के रूप में भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व किया।



## पंच—गौरव कार्यक्रम 2024 की कार्ययोजना जिला भरतपुर

### एक जिला एक उपज— शहद

#### प्रस्ताव—1 मधुमक्खी पालन का उत्कृष्टता केन्द्र—

- मधुमक्खी पालन व शहद उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए माननीय मुख्यमंत्री महोदय की बजट घोषणा वर्ष 2023–24 में भरतपुर जिले में मधुमक्खी पालन का उत्कृष्टता केन्द्र स्थापना की घोषणा की गई है। मधुमक्खी पालन का उत्कृष्टता केन्द्र स्थापना के लिए राज्य सरकार द्वारा भरतपुर शहर के समीप राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 21 पर ग्राम मई गुर्जर में 9.83 हैक्टेयर भूमि का आवंटन किया गया है। उक्त आवंटित भूमि में मधुमक्खी पालन का उत्कृष्टता केन्द्र स्थापना हेतु आवश्यक आधारभूत सुविधा विकसित किये जाने हेतु राजस्थान राज्य कृषि विपणन बोर्ड भरतपुर से तकमीना तैयार करवाया जाकर उद्यान आयुक्तालय को प्रेषित किया गया है, जिसमें अनुमानित लागत 1587.50 लाख है (संलग्न—1)।

(उत्कृष्टता केन्द्र का तकमीना में 1. ट्रेनिंग ऑडिटोरियम, 2. वी.सी. कम मींटिंग हॉल 3. शहद गुणवत्ता जॉच प्रयोगशाला 4. मोम शीट मेंकिंग कक्ष 5. शहद प्रांस्स्करण इकाई 6. शहद बोतलिंग यूनिट 7. शहद स्टोरेज गोदाम 8. प्रांस्स्करित शहद गोदाम 9. मोम स्टोरेज गोदाम 10. मधुमक्खी पालन इक्यूवमेन्ट 11. मधुमक्खी पालन बॉक्स बनाने की इकाई 12. प्रशिक्षणार्थी हॉस्टल 13. चिल्ड्रन बी—पार्क 14. लाइव बी पार्क डेमोस्टेशन 15. शहद पार्लर आदि विकसित किये जाने हैं।)

- भरतपुर जिले में उक्त मधुमक्खी पालन का उत्कृष्टता केन्द्र स्थापना के उपरान्त विभाग द्वारा शहद संग्रहण, भण्डारण, पैकेंजिंग, ब्राण्डिंग की जावेगी तथा उत्कृष्टता केन्द्र पर कृषकों को उन्नत तकनीक एवं शहद उत्पादन बढ़ोतरी सम्बन्धित प्रशिक्षण देकर दक्ष किया जावेगा।

#### प्रस्ताव— 2 मधुमक्खी पालकों व कृषकों के प्रशिक्षण

- जिले में मधुमक्खी पालन को बढ़ावा देने एवं शहद की उपज में बढ़ोतरी करने हेतु मधुमक्खी पालकों व कृषकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना सम्मिलित है। प्रशिक्षण कार्यक्रम—जिला स्तर पर एवं पंचायत समितिवार कृषकों के आयोजित किये जायेंगे। आयोजित किये जाने वाले प्रशिक्षण हेतु 1000 रुपये प्रति कृषक प्रतिदिन व्यय किये जा सकेंगे। प्रत्येक प्रशिक्षण में 50 प्रशिक्षणार्थी सामिल किये जायेंगे। प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रति प्रशिक्षण 50 हजार रुपये होगा, जिसकी कुल राशि 14 लाख रुपये प्रस्तावित है।

#### प्रस्ताव नम्बर — 3

मधुमक्खी पालकों को सम्बल प्रदान करने तथा शहद उत्पादन को प्रोत्साहन देने हेतु अनुमानित 300 मधुमक्खी पालकों को निशुल्क बी—कीपिंग किट उपलब्ध कराये जाये जिससे उत्कृष्टा के साथ मधुमक्खी पालन कार्य किया जा सके तथा शहद उत्पादन बढ़ाया जा सके। इस कार्य पर कुल व्यय 75 लाख रुपये व्यय होना प्रस्तावित है।

क्र.सं.	आईटम	अनुमानित राशि @ लाखों में
1	Honey Extractor - 8 Frem	
2	Tray with Jali - 1.5X3X1 Feet	
3	Net - 10X10 Feet	
4	Smoker	
5	Food Bucket	
6	Box Stand	
7	Bee- Weevle	
8	Knife	
9	Queen Protector	
10	Queen Care	
11	Brush	
12	Polon Tray	
13	Gloves	
14	Hive tool	
15	Feedar	
16	Bee gate	

0.25

## एक जिला एक उत्पाद— सरसों का तेल

### प्रस्ताव—1 सरसों उत्पादन बढ़ाना

- जिले में सरसों की उत्पादकता करीब 18 किं. प्रति हैक्टेयर है, अगर सरसों के उत्पादन से पूर्व भूमि में पर्याप्त मात्रा में हरी खाद/जैविक खाद का उपयोग कृषकों द्वारा उचित मात्रा में किया जावे तथा रासायानिक उर्वरक का उपयोग संतुलित मात्रा में किया जावे तो सरसों की उत्पादकता 22–25 किं. प्रति हैक्टेयर की जा सकती है।
- सरसों की उत्पादन क्षमता व तेल की मात्रा में बढ़ोतरी के लिए किसानों को अच्छी गुणवता का बीज उपयोग, मृदा की लवणीयता को कम करने के लिए हरी खाद/जैविक खाद का उपयोग, सरसों में तेल की मात्रा को बढ़ाने के लिए सल्फर उपयोग के लिए प्रोत्साहित करना होगा। इसके साथ ही संतुलित मात्रा में उर्वरक प्रयोग के प्रदर्शन आयोजित करना, कीट/रोग नियंत्रण के लिए पौध संरक्षण कार्य समय पर करना, तकनीकी जानकारी कृषकों को प्रशिक्षित करना आदि कार्य शुरू करने होंगे। उक्त कार्यों के लिए अनुमानित व्यय 112.12 लाख रुपये की संभावना है।

## प्रस्ताव–2 तेल प्रयोगशाला

- बृज उद्योग संघ कार्यालय, रीको औद्योगिक क्षेत्र, भरतपुर में पीपीपी मॉडल आधारित एनएबीएल से अधिकृत सरसों तेल प्रयोगशाला की स्थापना (अनुमानित लागत 1 करोड रुपये) वर्तमान में जिले की सरसों तेल इकाईयों द्वारा जयपुर एवं दिल्ली में सरसों तेल की जांच करवाई जाती है अतः जिले की सरसों तेल इकाईयों के प्रोत्साहन हेतु बृज उद्योग संघ कार्यालय, रीको औद्योगिक क्षेत्र, भरतपुर में पीपीपी मॉडल पर एनएबीएल से अधिकृत सरसों तेल प्रयोगशाला स्थापित की जा सकती है, जिसका विवरण निम्नानुसार है—

- Testing Facilities Required:-**

1. Chemical Parameters Test
2. Fatty Acid Profile
3. Heavy Metals Test
4. Crop Contaminants
5. Melamine Test
6. Naturally Occurring Toxic substances
7. Pesticides Residues Test
8. Nutritional Value Test
9. Vitamin A
10. Vitamin D-2
11. Corugated Boxes busitng factor test
12. Pet Bottles, Pouch filling, HDPE Container and metal tin container food grade test

- Regulatory Compliance:** Ensure the laboratory adheres to local regulations and standards, such as those set by the Food Safety and Standards Authority of India (FSSAI) and Agmark certification norms. Compliance ensures the credibility and acceptance of test results.

## एक जिला एक खेल— कुश्ती

- लोहागढ़ स्टेडियम में स्थित कुश्ती अकेडमी के हॉल की मरम्मत के लिए अनुमानित 30 लाख रुपये का प्रस्ताव है जिसमें हॉल मरम्मत, टीनशेड की मरम्मत, लाइट और चैंजिंग रूम, लैट बाथ की मरम्मत शामिल हैं।
- कुश्ती को बढ़ावा देने के लिए स्थाई प्रशिक्षकों की नियुक्ति की जानी आवश्यक है।
- तीन माह के अंतराल से एक कुश्ती को जिला स्तर पर प्रतियोगिता करवाई जाए जिसमें ब्लॉक स्तर के विजेता भाग लेकर अपनी प्रतिभा को निखार सकें। इस कार्य के लिए अनुमानित व्यय 4 लाख रुपये है।
- ब्लॉक स्तर पर कुश्ती की नर्सरी स्कूलों में खोली जाए और नियुक्त शारीरिक शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाए और जिन सरकारी स्कूलों में नर्सरी खेली जाए उनमें कुश्ती का मेट एवं एक कुश्ती हॉल की व्यवस्था करवाया जाना प्रस्तावित है। इस कार्य के लिए अनुमानित व्यय 40 लाख रुपये है।
- जिला स्तर पर कुश्ती के खिलाड़ियों के लिए आधुनिक सुविधाओंयुक्त फिजियोथेरेपी केन्द्र (सोनाबाथ, स्टीमबाथ एवं फिजियोथेरेपी) आदि की आवश्यकता है इसमें प्रशिक्षित कार्मिकों की नियुक्ति की जाकर आधुनिक उपकरण उपलब्ध कराये जायें। इस कार्य के लिए अनुमानित व्यय 30 लाख के प्रस्ताव है।

## एक जिला—एक पर्यटन स्थल— केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान

### कार्ययोजना—

केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान में पर्यटकों के लिये बुनियादी सुविधाएँ यथा पेयजल, केन्टीन सुविधा, टॉयलेट सुविधा, बैठने हेतु बैच, सीसीटीवी कैमरे आदि लगवाया जाने हेतु अनुमानित व्यय 40 लाख रुपये है।

- केवलादेव घना राष्ट्रीय पक्षी उद्यान की ब्राडिंग किया जाना आवश्यक है इसके तहत भरतपुर में विभिन्न स्थलों यथा बस स्टैण्ड, रेलवे स्टेशन, राजकीय संग्रहालय, किशोरी महल, लोहागढ़ किला, गंगा माता व लक्ष्मण मंदिर पर समुचित जानकारी दर्शाने वाले सूचना पट्ट लगाये जायें। इसके लिए अनुमानित व्यय 5 लाख रुपये है।
- राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 21 पर आगरा एवं जयपुर की ओर केवलादेव घना राष्ट्रीय पक्षी उद्यान की दूरी दर्शाने वाले आकर्षक स्थाई बोर्ड लगाये जाना प्रस्तावित है, इसके लिए अनुमानित व्यय 2 लाख रुपये है।
- केवलादेव घना राष्ट्रीय पक्षी उद्यान की पर्यटकों को उचित जानकारी प्रदान करने हेतु वन विभाग एवं पर्यटन विभाग की गाइडों का समय समय पर रिफ्रेशर कोर्स आयोजित किये जायें। इसके लिए अनुमानित व्यय 3 लाख रुपये है।

- विभिन्न रेल्वे स्टेशनों यथा भरतपुर, गोवर्धन, मथुरा, अलवर, जयपुर एवं दिल्ली में एलईडी स्क्रीन पर केवलादेव राष्ट्रीय पक्षी उद्यान से संबंधित लघु फ़िल्म / फोटो से प्रचार प्रसार किया जाये। इसके लिए अनुमानित व्यय 30 लाख रूपये है।
- केवलादेव घना राष्ट्रीय पक्षी उद्यान के प्रवेश द्वार पर पर्यटक सुविधा केन्द्र एवं वेटिंग रूम स्थापित किया जाना आवश्यक है, इसके लिए अनुमानित व्यय 25 लाख रूपये है।
- केवलादेव घना राष्ट्रीय पक्षी उद्यान में बर्ड सर्विलांस सिस्टम स्थापित कियेजाने के लिए अनुमानित व्यय 5 लाख रूपये है।

## एक जिला एक वनस्पति प्रजाति— कदम्ब

### प्रस्ताव— हाईटेक नर्सरी

- हाईटेक नर्सरी विकसित किये जाने के लिए 1 करोड़ 50 लाख रूपये व्यय आना प्रस्तावित है। इसमें विकसित की जाने वाली नर्सरी में मिट्टी भराई एवं समतल करना, पक्की दीवार का निर्माण, रैलिंग, 2 गेट, बोरवेल, लाईट कनैक्शन, पुराने भवनों का संधारण, गार्ड हाउस, वर्मी कम्पोस्ट शेड, पक्के बेड(ब्रिक्स), पॉली हाउस, वाटर टैंक, पार्किंगलाईन, ग्रीन हाउस, सिंचाई तंत्र, कियोस्क, विजिटर शेड, लैट-बाथ एवं पीने का पानी, जर्मीनेशन चैम्बर, पक्का रास्ता, लेबर शेड, जूलीफ्लोरा उन्मूलन, स्टोर रूम, टूल्स आदि कार्य किये जाने हैं।